राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • बृहस्पतिवार • 2 नवम्बर • 2023

कों को बड़ा मुनाफा दे सकती है मटर की खेती

ुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर
: कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
षि वैज्ञानिक डॉ. राजेश राय ने
ों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए
कि मटर की खेती किसानों की
ह उन्नति का माध्यम वन सकती है।
मटर की उत्कृष्ट खेती के तरीके भी
उन्होंने कहा कि मटर की खेती कम
में तैयार होने के कारण यह किसानों
ये लाभप्रद सावित हो सकती है। श्री
कहा कि मटर की खेती करने से
ों की कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति भी
जा सकती है। उन्होंने इस सम्वंध में
जरी जारी करते हुए कहा कि अगर
चक्र के अनुसार खेती की जाये तो
भूमि की उर्वरा शक्ति भी वढ़ती है।
की जड़ों में मौजूद राइजोवियम
जीवाणु भूमि को उपजाऊ वनाने में सहायक होता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि पर मटर की खेती की जाती है। यह कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7 प्रतिशत है। इस सम्वंध में शोध छात्र प्रसून सचान ने वताया कि मटर की वुवाई का सवसे उपयुक्त समय अक्टूवर के अंतिम पखवारे से नवंवर के दूसरे पखवारे तक है। मटर की वुवाई से पूर्व इसके वीजों को राइजोवियम से उपचारित कर लेना लाभप्रद रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि मटर के लिए 20 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस और 20 किग्रा पोटाश की जरूरत होती है। अगर किसान वेहतर कृषि प्रवंधन करें तो प्रति हेक्टेयर 25 से 30 क्विंटल उपज प्राप्त कर सकते हैं।

rni no uphin47232

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उरई, कन्नौज, फर्रूखाबाद, एटा से प्रसारित

कानपुर, गुरुवार 2 नवम्बर 2023 पृष्ठ :

किसान वैज्ञानिक विधि से करें मटर की खेती मिलेगा भरपूर लाभः डा राजेश राय

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7त्न है शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पकवारा से नवंबर मध्य तक उचित रहता है मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पीएमआर 400, के पीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

अमर भारती
संस्करण एक उम्मीद
मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com गुरुवार, 02 नवम्बर 2023 शक सम्वत् 1945,

मटर की वैज्ञानिक खेती कर किसान कमाएं लाभ

कानपुर, अमर भारती। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पी एम आर 400,केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

Title-code: UPHIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

02,11,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

Top News पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

मटर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाए किसान:- डा राजेश राय

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल Reporter

सत्य का असर समाचार पत्र

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7% है। शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पकवारा से नवंबर मध्य तक उचित रहता है मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पी एम आर 400,केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

,,,,,,,,,,,,,,,,,

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 59 कानपुर, गुरूवार 02 नवंबर-2023 पृष्ठ -8

किसान मटर की वैज्ञानिक खेती कर कमाए लाभ

समाज का साथी

कानपुर।सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7ल है। शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पकवारा से नवंबर मध्य तक उचित रहता है मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पी एम आर 400,केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

मटर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाए किसानः डा. राजेश राय

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7ब है। शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पकवारा से नवंबर मध्य तक उचित रहता है मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पी एम आर 400,केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।